PART (9) 21/3/2014

सत्य कबीराय नमः (9)

अथ श्री बोधसागरे Date

चतुर्थ स्तरंगः

श्री ग्रन्थ भोपाल बोध प्रारम्भ

धर्मदास वचन चौपाई

धर्मदास कहे दीन दयाल । जीवों को कैसे मारे काल ।
किसी विधि यम जीव फँसाये । साहिब कथा मुझे यही सुनाये ।
किस कारण यम उनको मारे । करे काल यह किसके सहारे ।

सतगुरु वचन

सद्गुरु कहें धर्म तुम्हे बताऊँ । महा काल कथा तुझे सुनाऊँ ।
धर्मराज आज्ञा जब करते । तब दूत प्रथ्वी पग धरते ।

धर्मराय वचन

जीव संख्या जब होय अपार । प्रथ्वी सह ना पाये भार ।
दूत अब तुम प्रथ्वी जाओ । जीवों को लोक हमारे लाओ ।
जीवों को लाने हमारे पास । यमदूत करो तुम प्रथ्वी बास ।
पवनरूप घट जाओ समाओ । जीवों को पकड़ तुम लाओ ।
खांसी जूड़ी ताप बुखार । काम क्रोध होय रोग अपार ।
लोभ मोह भ्रम फाँस अपार । जाने ना मर्म यह संसार ।
ऐसे ही जीव जाके फंसाओ । पकड़ के सम्मुख मेरे लाओ ।

(12)

साखी/दोहा :- यह विधि जग मे जाय के, लाओ जीव हम पास ।।
फन्दा डालो जीव पे, बनो दूत दुख रास ।।

Date _____

## चौपाई

यहि विधि काल आज्ञा सुनाये । चले यमदूत सब साज सजाये ।
तभी आज्ञा पुरुष हमे सुनाये । जीव मुक्ताने का काम बताये ।
कहे पुरुष सुनो ज्ञानी बात । काल करे अब जीव आघात ।
काल जीवो का आहार करेगा । तब भवसिन्धु ना जीव तरेगा ।
काल दुष्ट बहु जीव सताये । शब्द बिन जीव ना मुझको पाये ।
इसकारण तुम वहाँ सिधाओ । जीव चेता के लोक में लाओ ।
ज्ञानी आज्ञा लो मेरी मान । जगत के जीवों का करो निदान ।

साखी / दोहा — सुकृत जाके ससार में, करो जीव निदान ॥
शब्दसार दे जीव को, पहुँचाओ निजधाम ॥

## चौपाई

पुरुष आज्ञा ज्ञानी मान । आये जगत में कर प्रणाम ।
नृप भोपाल जलंधर देश । रख गये वहाँ जिन्दा भेष ।

जाकर सीढ़ी हम ठाढ़े रहते । पहरेदार से वचन ये कहते ।
राजा बुलाओ हमारे पास । दर्शन पाके करे दुख विनाश ।
लगाके कुंजी कुलुफ किवाँर । हमसे बोले सब पहरेदार ।
कोई कहे न्याय लेने आया । काई हमको चोर बताया ।
कोई कहे मार इसे भगाँए । निर्गुण भेद समझ ना पाँए ।
ऐसे ही बिताये सारी रात । फिर चमका सूर्य हुई प्रभात ।
तब हम लीला वहाँ दिखाये । महल कपाट तोड़ गिराये ।
~~कँगूरा सारे भूमि पर आते~~ ।
कंगूरा सभी धरती पे आते । ज्ञानी राजा सम्मुख जाते ।

साखा / दोहा — ज्ञानी पीछे दौड़े सभी, अचम्भित पहरेदार ॥
राजा भोपाल सम्मुख सभी, लगाने लगे गुहार ॥

चौपाई

Date

राजा सम्मुख सारे जाते । दीन गुहार उससे लगाते ।
करे प्रणाम जोड़ दोनों हाथ । यह जिन्दा अति दुष्ट है नाथ ।

यह रात द्वार हमारे आया । आपको बुलाने का आदेश सुनाया ।
हम ना माने इसकी बात । बीती रेना हुआ प्रभात ।

मंत्र फिर जिन्दा ऐसा चलाता । तोड़ कपाट कँगूरा गिराता ।
तब जिन्दा यहाँ दौड़ लगाये । हम पीछे उसके भागके आये ।
ना जाने कौन यह शैतान । करे सब नष्ट ये बिगाड़े काम ।

साखी दोहा सुनो वचन राजा मेरे, कहता सच्ची बात ।
वध इसका अभी करो, नहीं तो करे आघात ।

चौपाई

दरबान कहे सुनो महाराज । सुनके वेद करो तुम काज ।
विप्र बुलाओ सुनो मतिवान । करिये विवेक वीर सुजान ।

वेद आज्ञा से इसको मारें । नहीं तो ज़िन्दा क्या बिगाड़े ।
ऐसे वचन जब राजा बोला । तभी सिंहासन उसका डोला ।

हम तभी लीला एक दिखाते । राजमहल सोने का बनाते ।
कंचन कपाट रत्नों की पाँती । स्वर्ण खम्भ बने बहु भाँती ।

जड़े कंगूरा रत्न और लाल । चकित हुये राजा भोपाल ।

साखी/दोहा :- हुआ विवेक महाराज को, देख चरित्र ये महान ।
कौन समरथ पुरुष तुम, दर्श मुझे दो भगवान ।

ज्ञानी वचन चौ० Date _____

दास पुरुष के हम कहलाते । जीव काज हेतु जग में आते ।
पुरुष लोक सत्य परवाना । मरम ना इसका कोई जाना ।

साखी / दोहा :- हे राजा भोपाल सुन, जानो यम का जाल ॥
शब्द हमारा ध्याइये, नहीं तो खाये काल ॥

चौपाई

छोड़ो जपना राम का नाम । सत्य शब्द जपो हे मतिवान ।
अलख निरंजन छोड़ो देवा । त्याग के भ्रम कर गुरु की सेवा ।
सुरति चढ़ाके जपो तुम नाम । पहुंचो लोक पुरुष के धाम ।
जनम मरण जीव मिटाओ । सतगुरु शरण राजा पाओ ।
पुरुष ने आदेश हमें सुनाया । इसलिये दर्श तुम्हे कराया ।

छन्द / दोहा :- राजा करो भक्ति तुम, छोड़ो राज गुमान ॥
सब परिवार सहित तुम, लेलो वीरा पान ।
पान लेके कर आरती, जीव तिनका तोड़ ॥
अभय नाम कर ग्रहण, भय यमका छोड़ ॥

राजा भोपाल वचन चौपाई

तब राजा करे प्रार्थना । ले जाये महल कर याचना ।
धन्य भाग जो दर्शन पाए । अधम जीव को निज दास बनाए ।
कुटिल कठोर मैं करता पाप । दर्श आपके मिटाये तीनों ताप ।
मोह मनमें बहुत समाया । शब्द आपका उसे मिटाया ।
राजा को विचार ऐसा आता । चरण धुलाने का आदेश सुनाता ।

छन्द / दोहा :- गुरु ब्रह्म रूप प्रकाश, कोटि सूर्य समान ॥
पाप पुंज विनाशते, मुक्तिदाता अखिल भगवान ॥
सतपुरुष आये रूपधर, दीनों के हरने पाप ।
जीव पाके सतगुरु शरण, मिटाटे भवसिन्धु ताप ।

Date

सोरठा / दोहा : गुरु-पग हृदय धारिये, करिये मन उजियार ॥
स्थिर घर तब पाइये, मिटे जब अँधियार ॥

चौपाई

राजा आज्ञा रानी सुनती । साहिब चरण ओके धुलती ।
कंचन लोटा भर पानी लाती । प्रेम से साहिब चरण धुलाती ।
राजा रानी चरण धुलाये । आँचल से रानी उन्हें पुछाये ।
साहिब चरण सब शीश झुकाते । चरणामृत सब मिलकर पीते ।
करें दण्डवत पलपल रानी । दरश दिये हमको साहिब ज्ञानी ।

ज्ञानी वचन

साखी दोहा :- हमको ना भार चढ़ाइये, हमारा नाम कबीर ॥
अगम पुरुष को ध्याइये, तो पहुँचो भव तीर ॥

रानी वचन चौपाई

सुनके वचन हमारे रानी ।
सुनके वचन कहती रानी । करूँ वन्दना आपकी ज्ञानी ।
और कोई पुरुष मैं ना जानू । सत्पुरुष मैं आपको मानू ।
तुम ही पुरुष हमारे स्वामी । और पुरुष नहीं कोई ज्ञानी ।
रानी कहे सुनो महाराज । साहिब आये हमारे काज ।
राजा करिये शीघ्र वन्दना । नहीं तो काल हाथ होगा मरना ।
आये पुरुष हमारे पास । करने मन की पूरी आस ।

ज्ञानी वचन

सुनो राजा रानी मेरे वचना । यह तो जाल काल की रचना ।
मेरो काम क्रोध अभिमान । मोह माया को झूठा जान ।
ज्ञान हेतु दृढ़ करनी करना । आवागमन में ना तुम पड़ना ।
तज संसार शब्द को जपना । सत्पुरुष नाम मन में रखना ।

Date

साखी/दोहा :- आवागमन जिसके मिटे, ना स्वर्ग नरक जाय ॥
जो हंसा मुक्त हुये, अजर अमर घर पाय ॥

यह तो माया जाल है, कठिन वीर मतवाल ॥
जो शब्द ना मानिये, एक दिन खावे काल ॥

मोह नदि विकराल है, कोई ना उतारे पार ॥
सतगुरु केवट साथ ले, हंस दौड़े यम द्वार ॥

चौपाई

कोटि जतन मे तुझको करता । कैसे ध्यान लगाये पुरुष का ॥
कैसे छुड़ाऊँ राज गुमान । कैसे मिटाऊँ पाखण्ड अभिमान ।
कैसे छुड़ाऊँ राज बड़ाई । कैसे छुड़ाऊँ मैं चतुराई ।
रखते कुँवर पचास दिन रात । लगाके सभा जो करते बात ।
खेला करते खेल शिकार । नारी संग जो करो विहार ।
छूटे ना नाती कुटुम्ब की आशा । छूटे ना कंचन भोग विलास ।

साखी/दोहा :- यह सुख कैसे त्यागिये, हम तो हुये निराश ॥
सैन, चैन सब छोड़के, चलो पुरुष के पास ॥

राजा गोपाल वचन

राजा बोले सुनिये देवा । साहिब चरण की चाहुं सेवा ।
शीश हमारे धरिये हाथ । करिये अधमी को आप सनाथ ।
बीस हजार मैं त्यागूँ हाथी । छोड़ू सारे मैं संगी साथी ।
छूट गर्व और राज गुमान । छोड़ू पाखण्ड मैं अभिमान ।
छोड़े दौलत अब हम नाथ । छोड़े सकल कामिनी साथ ।
जब तुम अमृत वचन सुनाये । उसी क्षण विकार सभी मिटाये ।

Date

छन्द / दोहा :- दया निधान करुणामयी, करें दारुण दुख नाश ॥
मैं जीव पापी बहुत, रखिये निज-चरण पास ॥
तुम ज्ञान विज्ञान पुंज, धर्म कर्म के आगर ॥
नाम अमोल आपका, करिये दया है नागर ॥

सोरठा / दोहा :- सौभाग्य से पाये हम, साहिब भक्ति सार ॥
पुरुष दर्श कराइये, करूँ विनती बारम्बार ॥

रानी वचन - चौपाई

राजा तुमने सत् जाना मुझको । नाम पदार्थ मैं दूँगा तुझको ।
पुरुष नाम एक यज्ञ कराओ । उस नाम से हंस बचाओ ।
जरी चन्दोवा एक टँगवाओ । कंचन सिंहासन तुम मँगवाओ ।
मोती भरकर थाल मँगाना । उसपे आरती दीप जलाना ।
कंचन कलश जलाओ बाती । जल पात्र चमके हीरा भाँती ।
मँगाओ श्वेत फल मिष्ठान । राजा लाओ तुम चन्दन पान ।
केलेका फल श्रेष्ठ मँगाना । मेवा अष्ट उत्तम लाना ।
कदली पत्र कपूर सुगन्ध । आम पत्र लाओ चार दिशि बन्ध ।
सात हाथका वस्त्र मँगाओ । पुष्प गुलाब सुगन्धित लाओ ।
नौ रत्न के थाल मँगाओ । मणियों के बीच उन्हें सजाओ ।
यह सब विधि हम उसे बताये । राजा सभी वस्तु सभी मँगाये ।
आसन ग्रहण जब सतगुरु करते । रानी राजा चरण पकड़ते ।
सवा लाख दीप वहाँ जलाये । बहुत आनन्द शब्द सुनाये ।
सब मिल हाथ नारियल लीन्हे । आगे रख दण्डवत कीन्हे ।
राजा तृण मुख में रखते । हुये अधीन गुरुमुख बनते ।

राजा गोपाल वचन

तुम दीनों के प्रभु दयाल । कृपा किये मुझपे तुम कृपाल ।
भेद ना मुझसे रखना स्वामी । शिष्य अपना समझना ज्ञानी ।
भेद ना मुझसे रखना स्वामी । मुसाफिर जान अपना ज्ञानी ।
जगत से ना कुछ मेरा काम । काल है दारुण महा शैतान ।
अब तुम अपना लोक दिखाओ । महा पुरुष के दर्श कराओ ।

सतगुरु वचन

Date

नौ नार मिल करें प्रार्थना। कुंवर पचास भी करें याचना।
बेटी एक सूरज की ज्योत। मस्तक तेज ज्यों चमके मोती।
साहिब चरण अंकि खती माथा। चरण छोड़ ना जाऊं दाता।
करी आरती नारियल फोड़ा। सकल जीव का तिनक तोड़ा।
सुकृत अंश बुलाये रानी। पुरुष दर्श चाहें राजा रानी।
अमरावहु लोक हम लेके जाते। पल में वहाँ उन्हें पहुंचाते।
चार दिन काया अपनी रखना। तब तक काम एक राजा करना।
लिख लिख देना सबको पान। सब जीवों को तुम देना ज्ञान।
जितने जीव पान हमारा पाये। उतने हंस सतलोक सिधाये।

काया छोड़ हंस आगे चलते। सत्य सुकृत के चरण पकड़ते।
पुरुष दर्श की सब रखते आशा। तभी काल किये एक तमाशा।

सुकृत संग हंस थे जितने। आया काल रूप धर उतने।
मस्तक अपने इक तिलक बनाया। मार्ग में वो हमारे आया।

आओ हंस पुरुष के पास। नहीं तो होय तुम्हारा नाश।
बोले काल हंस किधर को जाते। हम गुरुजी सतराह दिखाते।

संग हमारे चलो तुम सारे। पास ना आये काल हमारे।
हंस रूप तुम धर आये काल। हम नहीं फंसे तुम्हारे जाल।

सुकृत कहें हंस आओ सारे। काल ना पाओ संग हमारे।
बारे अंग है काल का द्वारा। दाहिने अंग सतलोक हमारा।

उसी द्वार से सुरति लगाना। शीघ्र दर्शन पुरुष के पाना।
सुकृत सागर पहुंचे जाये। हंस सभी तुम लेओ नहाये।

स्नान सब हिलमिल करते। द्वीप की शोभा सभी निरखते।
देखते हंस लोक की रचना। सुकृत की फिर करे वन्दना।

Date _____

बैठे सतलोक हंस निहारें । जहाँ पुरुष आप पधारें ।
बैठे हंस लगा कर पाँती । सूर्य समान हंसो की काँती ।
पुष्प सेज सब हंस विराजा । वहाँ ना रंक ना कोई राजा ।
कंचन भूमि अति प्यारी लगती । हंस की शोभा कहेना बनती ।
राजा तब शीश झुकाये । रानी पुत्र सब गुहार लगाये ।
लौट भव में अब ना जाये । अति आनन्द बहुत सुख पाये ।

सुकृत वचन

सुकृत तब उन्हे समझाते । राजा रानी क्या गुहार लगाते ।
~~लौट के जो तुम जाओ~~
लौट के यहाँ से ना तुम जाओ । ठाट बाट अपने सभी मिटाओ ।
तब राजा तुम पछताओ । तत्क्षण शीघ्र यहाँ से जाओ ।

राजा भोपाल वचन

ठाट बाट चाहे मिटे हमारा । अब नहीं छोड़ू लोक तुम्हारा ।
ऐसा लोक छोड़ नहीं जायें । बार बार शीश तुम्हें नवाये ।

छन्द / दोहा :- राजा विनती बहुत किया, तुम प्रभु दीन दयाल ॥
हंस नायक हमें तारिये, काटिये फन्दा काल ॥

समरथ अधीन हम आपके, राखिये अपने साथ ॥
चरण कमल प्रताप से, काल ना पाये हमको नाथ ।

सोरठा / दोहा :- दास जान दया कीजिये, शरण हम तुम्हार ॥
हंस अपना प्रभु बनाईये । राखिये पुरुष दरबार ॥

Date

वचन चौपाई

ऐसी बिनती राजा करता । ज्ञानी देश जलन्धर बसता ।
भवसागर से ज्ञानी आये । पुरुष दर्श करके तब जायें ।
दिन चार ऐसे ही बिताये । राजा भेद ना किसी को बताये ।

राजा पास तब सैनिक आये । बनजर ना कोई उनको आये ।
कहाँ है राजा कहाँ है रानी । कहाँ है पुत्र कुँवर सब स्वामी ।

कहाँ है बेटी चन्द्रा प्यारी । जिसकी रूप छवि सबसे न्यारी ।
रोते हुये जाता पहरेदार । जोकि सबसे करी पुकार ।

जाति कुटुम्ब सब देखने आते । जो राजा सुख उन्हें कराते ।

साखी दोहा :- राजा सुधि जब ना मिली, सब गये अचम्भा मान ॥
राजा विरह से विकल सभी, रोते कुटुम्ब दीवान ॥

नगर लोग व्याकुल हुये, घर घर हुआ कोहराम ॥
मारा कौन महराज को, किसने किया यह काम ॥

चौपाई

कहे सैनिक सुनो दीवान । सब बात का हमको ज्ञान ।
जिन्दा एक नगर में आया । राजा से वो भेष दिखाया ।

राजा को हम बहुत समझाये । तुरंत जिन्दा को वह मरवाये ।
राजा समझे ना बात हमारी । किये क्रोध हम पर भारी ।

राजा मुक्तिदाता उन्हें बताये । चाल उसकी समझ ना पाये ।
समझे ना राजा मेरी बात । अपनी करनी का फल पाये नाथ ।

साखी दोहा :- सैनिक वचन सुनके सभी, व्याकुल हुये सब लोग ।
आज खाया महराज को, कल करे किसका भोग ।

Date

चौपाई

नगर लोग तब किये विचार । सब मिल भाग करो सन्हार ।
शब्द महिमा ना सूरख जाने । मृत्यु भय से हुये विरान ।

साखी / दोहा :- सुकृत अंश ना जान सके, अन्धा गये भुलाय ॥
धन्य राजा भोपाल है, जेप शब्द चित लाय ॥

हन्द / दोहा :- गये राजा लोक को, तजके मान गुमान ॥
ऐसा हंसे धर्मजी मिले, देना उसको बीरा पान ॥

कबीर शब्द को मानिये, छोड़ो सभी जग जंजाल ॥
हृदय सतशब्द बसाइये, दूर रहे दारुण काल ॥

सोरठा / दोहा :- जो हंस भोपाल सम, उससे कहो शब्द सार ॥
पुरुष चरण वास मिले, हो हंस वर्ण उजियार ॥

इति श्री ग्रंथ भोपाल बोध समाप्त